Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh.

Date- 03.07.2024 Class- V
Subject - Hindi Literature Page- 1
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 5
पाठ -5 'किताबें करती हैं बातें'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !
आज हम कक्षा पाँचवी के हिन्दी साहित्य का पाठ - 5 'किताबें करती हैं बातें' पढ़ेंगे।
बच्चो ! पाठ को समझने से पहले हम इसमें आए कठिन शब्द समझेंगे।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भंडार	खज़ाना	अनुभूति	महसूस करना
अध्ययन	मन लगाकर पढ़ना		
मनन	सोचना - विचारना	अंत:करण	हृदय
हितैषी	भला चाहने वाला	अमूल्य	जिसका मूल्य न लगाया जा सके
उपेक्षा	ध्यान न देने का भाव		

बच्चो ! पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र होती हैं। वे बुद्धिमान लोग होते हैं, जो अपने खाली समय में पुस्तकें पढ़ते हैं। पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी किताबों की एक मनभावन दुनिया है, जिसमें कहानियों, कविताओं, चुटकुलों, पहेलियों आदि का असीम भण्डार है। पुस्तकें हमारी मार्गदर्शक हैं और प्रेरणा का स्रोत भी। इस लिए हमें पुस्तकों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए

Scanned with CamScanner

Date- 03.07.2024 Class - V
Subject- Hindi Liberature Page - 2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

और संभाल कर रखना चाहिए।
बच्चो ! यह पाठ एकांकी विधा के अंतर्गत लिखा गया है। यह संपूर्ण पाठ आदी, दीया, बुआ जी और माँ के इर्द-गिर्द घूम रहा है।
किसी ने घर में रखी अलमारी का दरवाज़ा खोला तो धम-धम की आवाज के साथ किताबें अलमारी से बाहर गिर गईं।
वे आपस में बातें करने लगती हैं कि आदी और दीया तो हमारी अलमारी की तरफ देखते भी नहीं क्योंकि अब उन्होंने कंप्यूटर, टेलीविज़न और थोड़ा-बहुत ई-किताबों से नाता जोड़ लिया है। किताबें एक-दूसरे से कहती हैं कि जब दीया और आदी की बुआ जी ने हमें उनको दिया था तो उन्होंने कहा था कि, "किताबें ही इन्सान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं।" उन्होंने बच्चों को कहा था कि इनका अध्ययन ही नहीं मनन भी करना चाहिए। ये अंत:करण को उज्ज्वल बनाती हैं।
वो हमारे कितने अच्छे दिन थे जब बच्चे हमें अपने साथियों के साथ बदल-बदलकर पढ़ते थे, इसी बहाने हमारे भी नए-नए दोस्त बनते थे।
बुआ जी तो सावन की रिमझिम फुहार में झूले पर हमें हाथ में लिए बैठी रहती थीं।
किताबें बातें ही कर रही थी कि अचानक दीया और आदी की माँ ने रद्दीवाले भैया

Date- 03.07.2024 Class - V
Subject - Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

को आवाज़ लगाई और बच्चों को बिखरी हुई किताबें उठाकर लाने को कहा। किताबें ठान लेती हैं कि आज बच्चों को अपनी उपयोगिता बताकर रहेंगी नहीं तो हम गुजरे दौर का हिस्सा बनकर रह जाएँगी। हम केवल म्यूज़ियम में ही दिखा करेंगी। जब बच्चे किताबों को उठाकर रद्दीवाले को देने लगे तो वो बोल उठीं कि हमें रद्दीवाले को देने की बजाय ज़रूरतमंद बच्चों को दे दो ताकि उनके जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैला सकें और समाज के विकास में योगदान दे सकें। हम शिक्षक और शिष्य के बीच की डोरी हैं। हमने मनोरंजन के साथ-साथ जीवन मूल्यों का संचार भी किया है।

पहले समय में जानकारी को भोज-पत्र, कपड़े आदि पर स्याही से लिखा जाता था। जब कागज की खोज हुई तब हमें यह स्वरूप मिला है जो तुम्हारे हाथ में है। अब हमारे इस स्वरूप को चुनौती दी है ई-किताबों ने। कागज़ पर छपी किताबों की लोग उपेक्षा करने लगे हैं।

सहकार्य :- ≐ इस 'एकांकी' के शब्द-अर्थ को विद्यार्थी अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे एवं याद करेंगे।

Last page

Scanned with CamScanner